कथकली (केरल)

कथकली (केरल)

कथकली के स्रोत

- **रामानट्टम:** **रामायण** की घटनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- **कृष्णाट्टम:** **महाभारत** की घटनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- **नृत्य, संगीत** तथा **नाटक** का संयोजन।
- आमतौर पर **कथकली पुरुषों तथा युवा बालकों**, जो **पुरुष** तथा **स्त्री दोनों की भूमिका** निभा सकते हों, द्वारा किया जाने वाला प्रदर्शन है। महिलाएँ इसमें भाग नहीं लेती हैं।

- **कथकली गीतों की भाषा:** मणिप्रवलम (मलयालम और संस्कृत का मिश्रण)
- इसे **'पूर्व का गाथागीत'** भी कहा जाता है।
- **आँखों और भौहों की लय के माध्यम से रस के निरूपण** में उल्लेखनीय।
- **नवरस:** चेहरे के नौ महत्त्वपूर्ण भाव।
- नर्तक **राजाओं, देवताओं** तथा **राक्षसों** इत्यादि की भूमिका का निरूपण करते हैं।
- **अच्छाई** और **बुराई** के बीच शाश्वत संघर्ष का भव्य निरूपण।
- वर्ष 1930 में प्रसिद्ध **मलयाली कवि वी.एन.मेनन** द्वारा **मुकुंद राजा** के संरक्षण में इसका पुनरुत्थान किया गया।

परिधान

- चेहरे का सुपरिष्कृत शृंगार
- बड़ा घेरदार घाघरा (स्कर्ट)
- अलंकृत मुखौटे
- बड़ी टोपी (हेडगियर)

चेहरे पर प्रयुक्त विविध रंग अलग-अलग मानसिक स्थिति के परिचायक

- **हरा:** कुलीनता
- **काला:** दुष्टता
- **लाल धब्बे:** राजसी गौरव तथा बुराई का संयोजन
- **पीला:** संत और महिलाएँ
- **सफेद दाढ़ी:** उच्चतर चेतना तथा देवत्व
- हाथों के हाव-भाव, चेहरे की अभिव्यक्ति तथा आँखों की हरकतें महत्त्वपूर्ण हैं।

वाद्ययंत्र

- ढोल
- छेंद
- मद्दला

प्रसिद्ध प्रवर्तक

- गुरु कुंचू कुरुप, गोपी नाथ, कोट्टकल शिवरमन तथा रीता गांगुली आदि।

DRISHTI IAS

और पढ़ें...

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/kathakali-kerala